समाजशास्त्रीय सिद्धांत

Miss Chhaya
Assistant professor
Department of sociology
J.k.p.(pg) college muzaffarnagar

संरचनात्मक सिद्धांत

प्रस्तावना- सामान्य भाषा में संरचना शब्द का प्रयोग बनावट या ढांचे से लिया जाता है।या एक प्रकार का प्रतिमान होता है जब किसी भवन को बनाया जाता है तो उस भवन का ढांचा या स्वरूप एक प्रकार की संरचना कहीं जाती है। 16 वीं शताब्दी में जाकर इस अवधारणा का प्रयोग किसी एक संपूर्ण व्यवस्था के अंगों के पारस्परिक संबंधों के साथ लिया गया।वस्तुतः संरचना का यह प्रयोग शरीर रचना विज्ञान में अधिक हुआ। इसके बाद इसका प्रयोग राजनीतिक दार्शनिकों ने किया।

समाजशास्त्र में सामाजिक संरचना का सर्वप्रथम प्रयोग करने वाला समाजशास्त्री **हरबर्ट स्पेंसर** था इन्होंने अपनी पुस्तक **प्रिंसिपल ऑफ सोशियोलॉजी** में इसका प्रयोग किया ब्रिटिश मानवशास्त्री **फॉयड फ्रेडरिक नाडेल** ने अपने विशिष्ट संरचना वादी सिद्धांत से मानवशास्त्र और समाज शास्त्र दोनों पर अत्यधिक प्रभाव डाला।

संरचनात्मक सिद्धांत का अर्थ

सामाजिक संरचना का प्रयोग समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र दोनों में होता है इन दोनों विज्ञानों से मे इसका अलग-अलग प्रयोग हुआ है इसका अर्थ विभिन्न परिभाषाओ से समझा जा सकता है-

- **मर्टन के अनुसार-** "सामाजिक इकाइयों की क्रमबद्धता और उनकी पारस्परिक निर्भरता से उत्पन्न व्यवस्था को सामाजिक संरचना कहते हैं।"
- **पारसंस के अनुसार-** "सामाजिक संरचना परस्पर संस्थाओं एजेंसियों और सामाजिक प्रतिमानों तथा साथ ही प्रत्येक सदस्य द्वारा ग्रहण किए गए पदों तथा कार्यों की विशिष्ट कर्मबद्धता को कहते हैं।"
- **मैकाइवर तथा पेज के अनुसार-** "समूहो के बनने के विभिन्न तरीकों के संयुक्त रूप को ही सामाजिक संरचना का है।"
- **रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार-** "सामाजिक संरचना संस्था द्वारा परिभाषित नियमित संबंधों में लगे हुए व्यक्तियों की एक क्रमबद्धता है।"

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक संरचना की विभिन्न इकाइयां समूह संस्थाओं तथा सामाजिक संबंधों से निर्मित एक प्रतिमान एवं कर्मबद्ध ढांचा है।

सामाजिक संरचना की विशेषताएं

- सामाजिक संरचना बाह्य स्वरूप का बोध कराती है
- सामाजिक संरचना अखंड व्यवस्था नहीं है
- अन्त संबंधित इकाइयों एक व्यवस्थित स्वरूप
- व्यवस्थित क्रमविन्यास
- सामान्यता एक स्थायी अवधारणा
- इसका निर्माण अनेक उप संरचनाओं से होता है
- स्थानीय विशेषताओं से प्रभावित
- विघटन के तत्व भी पाए जाते हैं

सामाजिक संरचना के प्रमुख स्वरूप

पारसंस ने अपनी पुस्तक **द सोशल सिस्टम** में सामाजिक संरचना के चार स्वरूप बताएं है

1. सार्वभौमिक अर्जित प्रतिमान
2. सार्वभौमिक प्रदत्त प्रतिमान
3. विशिष्ट अर्जित प्रतिमान
4. विशिष्ट प्रदत प्रतिमान

टालकॉट पारसंस के द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण चार प्रकार के सामाजिक मूल्यों पर आधारित है

1. सार्वभौमिक सामाजिक मूल्य
2. विशिष्ट सामाजिक मूल्य
3. अर्जित सामाजिक मूल्य
4. प्रदत सामाजिक मूल्य

इन्हीं चार मूल्यों के आधार पर **टालकॉट पारसंस** ने सामाजिक संरचना के चार प्रारूपों या प्रति मानव को समझाया है

नैडेल का सामाजिक संरचना सिद्धांत

ब्रिटिश मानवशास्त्री **नैडेल** ने अपने विशिष्ट संरचना वादी सिद्धांत से मानव शास्त्र और समाजशास्त्र दोनों पर अत्यधिक प्रभाव डाला है उनका संरचनावादी सिद्धांत कहीं-कहीं **ब्राउन** से साम्य रखता है तो कहीं कुछ मुद्दों के आधार पर उनसे प्रथक है **रेडक्लिफ ब्राउन** जहां सामाजिक पदों की प्रणाली अथवा व्यक्तियों की व्यवस्था को सामाजिक संरचना कहता है वही **नेडेल** किसी वस्तु या सत्ता के भागो की व्यवस्था को सामाजिक संरचना के रूप में मान्यता प्रदान करता है

नैडेल ने सामाजिक संरचना का विस्तृत विश्लेषण अपनी कीर्ति सामाजिक संरचना का सिद्धांत 1957 में किया है। सामाजिक संरचना की विवेचना करते हुए नाडेल ने इसकी व्याख्या तीन स्तर पर की है प्रथम स्तर पर उन्होंने समाज की अवधारणा को स्पष्ट किया है, द्वितीय स्तर पर संरचना की अवधारणा को और तीसरे स्तर पर सामाजिक संरचना का विश्लेषण किया है

समाज की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा है कि इसे दो दृष्टिकोण से देखा जा सकता है

1. क्रिया के रूप में जैसे नातेदारी और अर्थव्यवस्था
2. समूह के रूप में जैसे परिवार और गोत्र

सामाजिक संरचना के आवश्यक तत्व एवं संरचना की अवधारणा

नैडेल के अनुसार, समाज की रचना तीन आवश्यक तत्वों से होती है

1. व्यक्तियों का समूह
2. संस्थागत नियम जिससे कि समूह अंतर क्रिया करते हैं
3. इनंते क्रियाओं का केक प्रतिमान अथवा अभिव्यक्ति

नैडेल इस प्रतिमान या अभिव्यक्ति को ही संरचना कहते हैं इनका कहना है कि संस्थागत नियमों या प्रतिमाओं में सरलता से परिवर्तन नहीं होता तथा ये ही समाज में व्यवस्था को स्थापित रखते हैं।

संरचना की अवधारणा समाज की अवधारणा की व्याख्या के उपरांत इन्होंने संरचना की अवधारणा को व्याख्यित किया है। इनके अनुसार किसी वस्तु या सत्ता के हिस्सों के औपचारिक संबंधों को संरचना कहते हैं। संरचना की रचना आनुमानिक तथ्यों, वस्तुओं, घटनाओं, के प्रबंधन से होती है जिसे देखा जा सकता है यह तथ्य संरचना को एक व्यवस्थित क्रम में प्रदर्शित करते हैं नाडेल की इस व्याख्या के आधार पर संरचना के तीन प्रमुख तत्व माने जा सकते हैं

1. आनुभविक तथ्य
2. तत्वों के मध्य औपचारिक संबंधों के आधार पर निर्मित भाग
3. इन हिस्सों के मध्य व्यवस्थित क्रमविन्यास

भूमिका की संकल्पना

नाडेल ने अपने संरचना सिद्धांत में भूमिका की संकल्पना को महत्वपूर्ण स्थान दिया है भूमिका व्यक्ति एवं समाज के बीच मध्यस्थ का कार्य करती है भूमिका का अर्थ व्यवहार से लिया जाता है भूमिका केवल अंतर क्रियाओं की दशा में संभव है उनका कहना है कि सामाजिक संरचना भूमिकाओं की व्यवस्था है इस प्रकार नाडेल में सामाजिक संरचना के विश्लेषण के लिए तीन मापदंड या तत्व बताएं हैं –

1. सदस्यता
2. अंतर पारस्परिक नियंत्रण
3. संसाधन लाभों पर सापेक्षिक नियंत्रण

रेडक्लिफ ब्राउन का सामाजिक संरचना सिद्धांत

रेडक्लिफ ब्राउन जो सामाजिक मानवशास्त्र के प्रणेता कहे जाते हैं ने इस अवधारणा को केवल स्पष्ट ही नहीं किया अपितु अंडमान दीप समूह के निवासियों के सामाजिक जीवन के अध्ययन में इसे प्रयोग करके भी दिखाया। **ब्राउन संरचना** शब्द से विश्लेषण प्रारंभ करते हैं और लिखते हैं कि **जब भी हम संरचना शब्द का प्रयोग करते हैं तो इससे हमारा अभिप्राय भागो अथवा संघटकों के बीच किसी प्रकार के व्यवस्थित क्रम से है।**सामाजिक संरचना का अर्थ स्पष्ट करते हुए एक और विशेष बात पर बल दिया है वे कहते हैं कि संरचना हमें दो रूपों में दिखाई देती है-

1. प्रथम तो वह जो किसी निश्चित समय बिंदु पर मूर्त यथार्थ के रूप में हमें वास्तव में विद्यमान दिखाई देती है।
2. द्वितीय संरचनात्मक स्वरुप जिसका अवलोकनकर्ता वर्णन करता है।

सामाजिक संरचना की विशेषताएं एवं तत्व

ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना की विशेषताएं निम्नलिखित है-

1. अवलोकन किया जा सकने वाला यथार्थ
2. अमूर्त स्वरुप
3. निरंतरता एवं स्थायित्व
4. गत्यात्मक निरंतरता
5. सामान्य स्वरूपों से संबंधित
6. स्थानीय आयाम
7. सामाजिक व्यक्तित्व की अवधारणा
8. प्रकार्य से भी संबंधित

ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना के तत्व निम्नलिखित हैं

1. समूह
2. सामाजिक संबंध
3. संस्थाएं
4. सामाजिक भूमिकाओं के अनुसार व्यक्तियों और वर्गों का विभेदीकरण
5. हित एवं मूल्य
6. संस्कार
7. जादू एवं भूत विद्या

सामाजिक संरचना के अध्ययन के विभाग

ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना के अध्ययन के तीन विभाग हैं

1. सामाजिक रचना शास्त्र
2. सामाजिक शरीर शास्त्र
3. प्रक्रियाओं का अन्वेषण

इस प्रकार स्पष्ट है कि ब्राउन द्वारा प्रतिपादित सामाजिक संरचना की अवधारणा अपने में एक पूर्ण अवधारणा है जो आनुभविक अध्ययन के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करती है और जिसके प्रयोग द्वारा किसी समाज के सामाजिक जीवन का अध्ययन और विश्लेषण सुगम बन जाता है।

लेवी स्ट्रॉस का सामाजिक संरचना का सिद्धांत

लेवी स्ट्रॉस के अनुसार सामाजिक संरचना का संबंध किसी भी प्रकार की प्रयोग सिद्ध वास्तविकता से नहीं है अपितु उन प्रारूपों से है जो संरचना को विकसित करते हैं। **स्ट्रक्चरल एंथ्रोपोलॉजी** नामक पुस्तक में स्ट्रॉस का यह निष्कर्ष है कि भाषा विज्ञान और सामाजिक संरचना का विश्लेषण अधिक स्पष्ट हो सकता है

स्ट्रॉस एक प्रमुख संरचनावादी विद्वान है उन्होंने केवल सामाजिक संरचना की अवधारणा ही विकसित नहीं की बल्कि विनिमय का संरचनावादी सिद्धांत भी प्रतिपादित किया है साथ ही उन्होंने नातेदारी व्यवस्था के अध्ययन से भी सामाजिक संरचना की अवधारणा को अपनाया है। और इसे उपयोगी माना है। **स्ट्रॉस** की रचनाओं में संरचनात्मक तथा प्रकार्यवाद काफी सीमा तक एक दूसरे से पुनःजुड़े हुए दिखाई देते हैं इन्होंने **दुर्खीम** को प्रमुख आधार माना है तथा **रेडक्लिफ ब्राउन** व **मैलिनोवस्की** का भी इन पर प्रभाव पड़ा है।

मिथकों की व्याख्या-स्ट्रॉस की लोकप्रियता उनकी नातेदारी की संरचना के विश्लेषण के कारण हैं उनका प्रिय विषय मिथक की व्याख्या है वे कहते हैं कि किसी भी मिथक में नाना प्रकार की कहानियां और विषय उनकी सामग्री होते हैं। इन सब में अंतर्निहित कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो निरंतर पाए जाते हैं वे तत्व जो विभिन्न मिथकों मे समान रूप से बने होते हैं संरचना है नातेदारी विश्लेषण को ही उन्होंने मिथक पर लागू किया है हमारे विचारों में जो प्रक्रिया है वही हमें मनुष्य बनाती है वह कहते हैं कि जो कुछ हमारा दैनिक जीवन है व्यवसाय, रीति रिवाज, परंपराएं आदि है। इन सबके पीछे मनुष्य की बौद्धिक गतिविधियां हैं ऐसा नहीं होता कि समाज का संगठन बौद्धिक क्रियाओं को बनाता है।

भाषा वैज्ञानिकों का प्रभाव और जटिल संरचनावादी

वास्तव में levi-strauss अपनी सिद्धांत की प्रेरणा भाषा वैज्ञानिकों से लेते हैं वह कहते हैं कि वस्तुओं के घटने का कारण भाषा है और उसके अवधारणाएं हैं कभी भी भाषा वस्तुओं का परिणाम नहीं होती। यह इसी कारण है कि हम बादशाह के माध्यम से वस्तुओं में अपने आप को समझाते हैं प्रत्येक भाषा में एक गहन व्याकरण होती है जिसमें सभी भाषाओं में सहमति होती है इसका अर्थ यह हुआ कि दुनिया भर की भाषाओं में ऐसे शब्द होते हैं जो दुनिया के बारे में हमें जानकारी देते हैं।

जटिल संरचनावादी लेवी स्ट्रॉस एक जटिल संरचना वादी कहे जाते हैं उनका सिद्धांत मानव शास्त्रियों में पूरी गंभीरता के साथ लिया जाता है यह सब होने पर भी समाज वैज्ञानिक उनके सिद्धांत को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।इन समाज वैज्ञानिकों का कहना है कि स्ट्रॉस ने केवल हाथ की सफाई बताई है अपनी व्याख्या में उन्होंने कहीं भी भद्दे तथ्यों का स्थान नहीं दिया है वे उनकी अपेक्षा करते हैं फिर भी विषय वस्तु के आधार पर **गिडिग्स** में उनके लेखन को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है

1. नातेदारी व्यवस्थाओं का अध्ययन
2. आदिम वर्गीकरण एवं टोटम वाद का सिद्धांत
3. पुराण कथा के तर्क का विश्लेषण

इस प्रकार **स्ट्रॉस** के अनुसार संरचनावाद विश्लेषण का उद्देश्य सुबोधगम्य यथार्थता की अंतर्वस्तु को अपने प्राप्त करना है इन सब के होते हुए भी सोचने संरचना तथा व्यवस्था में स्पष्ट भेज नहीं किया है कुछ भी हो उस रोज का संरचना वाद सिद्धांत विचार को मे एक प्रमुख स्थान रखता है।